

## पद १७४

(राग: जोगिया - ताल: केहरवा)

तू शाहवली मुरशद हो जी, कहीं ज़ाहिर हो कहीं बातिन् हो ॥ध्रु. ॥  
कहीं राम बने कहीं रहीम बनें । यह वजूद उलट पुलट हो जी ॥१॥  
कहीं नबी, अली, महबूब बने । कहीं शाह, रतीब, अमीर,  
बने ॥२॥ कहीं बुतपरस्त, कहीं खुदपरस्त, कहीं मुरशद मानिक  
बंदा बने ॥३॥